बच्चों के लिए

नन्हा जानदार

अल्लाह की निशानी

डॉ० शम्सुल-इस्लाम फ़ारूक़ी

पेश लफ़्ज़

आज बच्चों के अदब की अहमियत बहुत ज़्यादा बढ़ गई है। ज़रूरत है कि छोटे बच्चों के लिए ऐसी किताबें तैयार की जाएँ जिनमें क़िस्से-कहानियों के अन्दर ही क़ुरआन व हदीस की तालीमात और हिकमत की बातें बयान की गई हों, ताकि बच्चे इन्हें शौक़ से पढ़ें और वे बातें उनके दिमाग़ों में अच्छी तरह बैठ जाएँ । इस्लामी तहरीक के साहित्यकारों और अदीबों ने इस तरफ़ पूरा ध्यान दिया है और उनके द्वारा बहुत अच्छा बाल-साहित्य सामने आया है। डॉ॰ शम्सुल-इस्लाम फ़ारूक़ी भी इन्हीं लिखनेवालों में शामिल हैं। उन्होंने बच्चों के बौद्धिक स्तर को सामने रखते हुए आसान ज़बान में उनके लिए साइंस (विज्ञान) पर आधारित कई किताबें तैयार की हैं। यह किताब भी इसी सिलसिले की एक कड़ी है।

क़ुरआन में शहद की मक्खी का बयान आया है। इसमें बताया गया है कि मक्खी अपना छत्ता किस तरह तैयार करती है। वह फूलों का रस चूस-चूसकर जमा करती है और फिर इससे शहद की शक्ल में एक मज़ेदार शरबत तैयार होता है, जिसमें लोगों की बीमारियों का इलाज है। अल्लाह तआला ने शहद की मक्खी के रहने-सहने के तौर-तरीक़ों और ज़िन्दगी पर सोच-विचार करनेवालों के लिए अपनी निशानी ठहराया है। इस छोटी-सी किताब में विद्वान लेखक ने इन्हीं बातों को आसान ज़बान में कहानी के रूप में पेश किया है। उम्मीद है, बच्चे इसे बहुत दिलचस्पी से पढ़ेंगे और कहानी का मज़ा लेने के साथ ही क़ुरआन की बातें भी सीखेंगे। अल्लाह तआला लेखक को इसका अच्छा बदला दे और इसका फ़ायदा सबको पहुँचाए। आमीन!

14 दिसम्बर 2013

—मुहम्मद रज़ी-उल-इस्लाम नदवी
सेक्रेट्री तस्नीफ़ी एकैडमी
जमाअत इस्लामी हिन्द
नई-दिल्ली

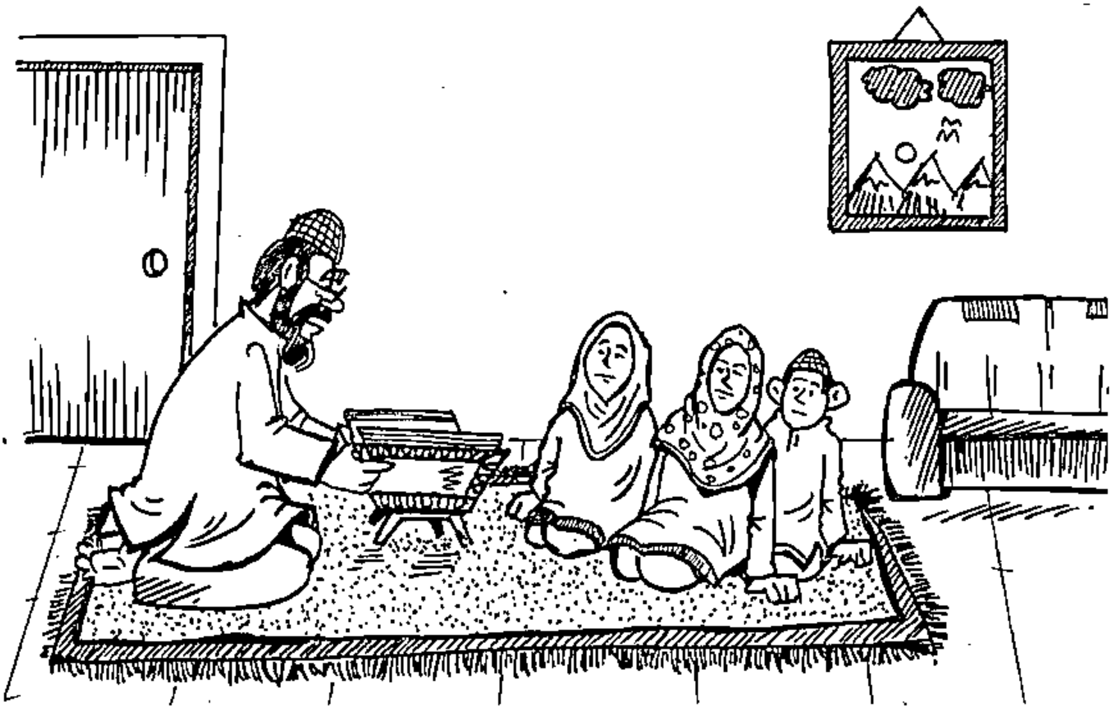
बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
'अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान बहुत रहमवाला है।'

शहद की मक्खी

ऐमन और अमीन अपने दादा अब्बू के साथ गर्मियों की छुट्टियाँ गुज़ारने श्रीनगर आए हुए थे। यहाँ उनके बड़े पापा रहते थे। उनकी बेटी शिफ़ा इन दोनों की पक्की दोस्त थी। शिफ़ा बड़ी थी और अब सातवीं क्लास में पढ़ रही थी। ऐमन उससे थोड़ी छोटी थी, जबकि अमीन, जो इन दोनों का चचेरा भाई था, सबसे छोटा था। उम्र में फ़र्क़ होने के बाद भी इन तीनों में ख़ूब बनती थी। यही वजह थी कि ऐमन और अमीन को श्रीनगर आना बहुत पसन्द था और उन्हें यहाँ आने में बहुत मज़ा आता था। इतवार को ऐमन के बड़े पापा की छुट्टी थी, इसलिए सबने तय किया था कि नाश्ता तैयार करके सब लोग बोटैनिकल गार्डेन (Botanical Garden) जाएँगे और वहीं खुली हुई हवादार जगह पर नाश्ते का मज़ा लेंगे।

शिफ़ा के दादा अब्बू की हमेशा से आदत थी कि वह हर इतवार की सुबह घर के सब लोगों को जमा करके क़ुरआन का कोई सबक़ ज़रूर देते थे। उस रोज़ भी जबकि बोटैनिकल गार्डेन जाने का प्रोग्राम था, इसके बावजूद उन्होंने क़ुरआन के दर्स का प्रोग्राम किया। यह अलग बात है कि उसे मुख़्तसर (संक्षिप्त) कर दिया था। जब सब लोग जमा हो गए तो उन्होंने क़ुरआन की सूरा-16 नहल की दो आयतें-68, 69 पढ़ीं और फिर उनका तर्जमा सुनाया।[1]

1. और देखो तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर यह बात वह्य कर दी कि पहाड़ों और पेड़ों और टट्टियों पर चढ़ाई हुई बेलों में अपने छत्ते बना और हर तरह के फलों का रस चूस और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चलती रह। इस मक्खी के अन्दर से रंग-बिरंगा एक शरबत निकलता है जिसमें शिफ़ा है लोगों के लिए। हक़ीक़त में इसमें भी एक निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर-फ़िक्र करते हैं। (क़ुरआन, सूरा-16 नहल, आयतें-68,69)



इन आयतों में शहद की मक्खी का बयान था, जिसके बारे में कई बातें कही गई थीं और साथ ही यह भी बताया गया था कि जो लोग इन बातों पर ग़ौर-फ़िक्र करते हैं, उनके लिए यह अल्लाह की निशानियाँ साबित होती हैं। इन आयतों का चूँकि सिर्फ़ तर्जमा बयान किया गया था और उनके बारे में कोई तफ़सीली बातें नहीं हुई थीं, इसलिए बच्चों के दिमाग़ों में कई तरह के सवालात सिर उठाने लगे थे। जैसे क्या अल्लाह तआला शहद की मक्खी जैसे जानदारों पर भी वह्य भेजता है? क्या शहद की मक्खी सिर्फ़ उन्हीं जगहों पर अपने छत्ते बनाती है जहाँ क़ुरआन ने इशारा किया है? अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए रास्ते कौन-से हैं, जिनपर चलते रहने का हुक्म शहद की मक्खी को दिया गया है? वह फूलों और फलों का रस किस तरह चूसती है और फिर उससे शहद कैसे बना लेती है? मक्खियों के अन्दर से निकलनेवाला रंग-बिरंगा शरबत क्या है, जिसमें लोगों की बीमारियों का इलाज बताया गया है? यह सचमुच ऐसी बातें थीं जिनके बारे में हर बच्चा जानना चाहता था, लेकिन आज चूँकि बाहर जाकर खुली फ़िज़ा का मज़ा लेने का प्रोग्राम बन गया था, इसलिए दादा अब्बू ने

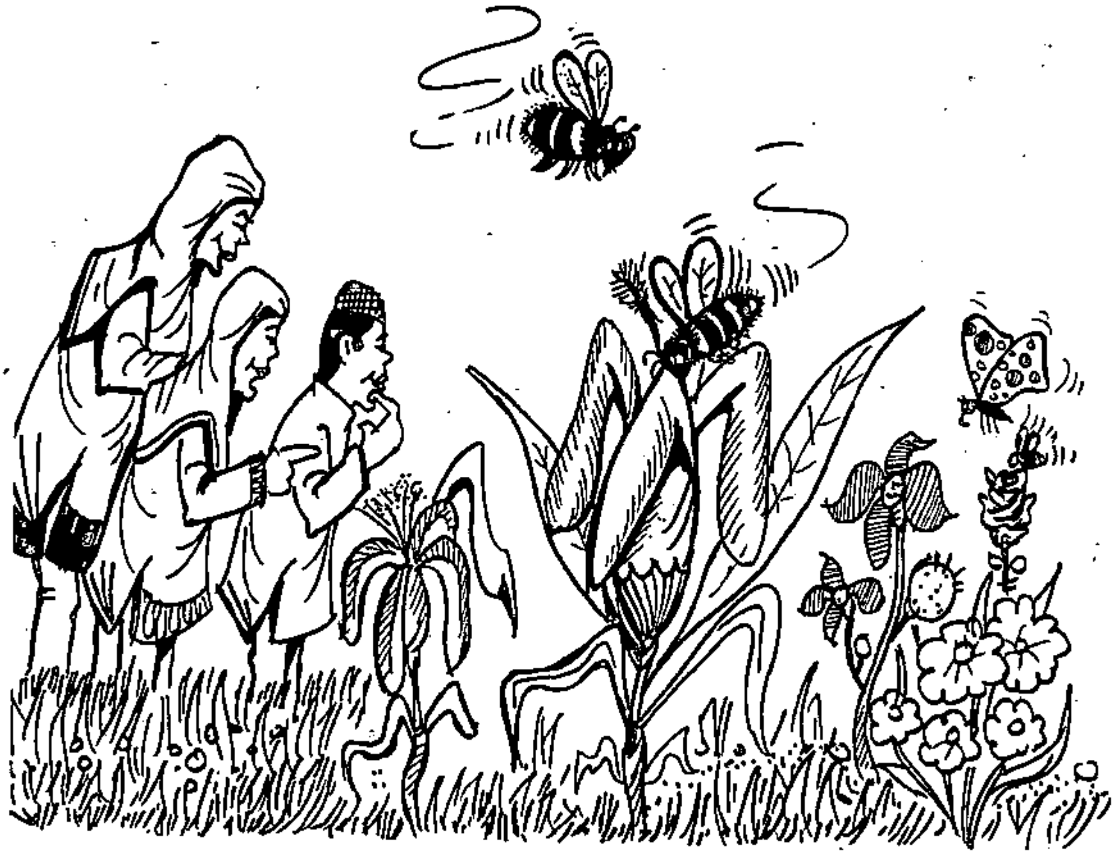
सिर्फ़ तर्जमा ही सुनाया, मगर उन्होंने यह वादा ज़रूर किया था कि जल्द ही वह बच्चों को इस बारे में अगर अल्लाह ने चाहा तो बहुत-सी दिलचस्प और काम की बातें बताएँगे।

सबक़ ख़त्म होते ही जल्दी-जल्दी नाश्ते का सामान कार में रखा गया और सब लोग बोटैनिकल गार्डेन आ गए, जो घर से ज़्यादा दूर नहीं था। यहाँ का हर घास का मैदान बहुत हरा-भरा और साफ़-सुथरा था। ये लोग वहाँ फूलों की एक क्यारी के पास ही दरी बिछाकर बैठ गए। बोटैनिकल गार्डेन के हरे मैदान बहुत बड़े-बड़े हैं। हर तरफ़ हरी-हरी क़ालीनें बिछी हुई मालूम होती हैं। यहाँ की सबसे बड़ी ख़ूबी उसका फैलाव है। यहाँ एक वक़्त में कितने ही लोग क्यों न आ जाएँ, फिर भी भीड़ का एहसास बिलकुल नहीं होता। यहाँ आनेवाले हर आदमी को ऐसा लगता है जैसे वह अपने ही घर के किसी हिस्से में बैठा हुआ है। फूलों की अनगिनत क्यारियों के अलावा यहाँ तरह-तरह के पेड़ लगे हैं, जिनका रख-रखाव बस देखते ही बनता है। चिनार, बांदाम और अख़रोट के पेड़ तो बहुत ही बहार बिखेरते हैं। यह लम्बा-चौड़ा बाग़ चारों तरफ़ से ऊँचे-ऊँचे हरे-भरे पहाड़ों से घिरा हुआ है। बाग़ के अन्दर एक बहुत बड़ी झील भी है, जिसमें किराये की नौका लेकर नौका चलाने का आनन्द भी लिया जा सकता है। झील में जगह-जगह ऊँचे-ऊँचे फ़व्वारे हर वक़्त चलते रहते हैं, जिनसे इसकी ख़ूबसूरती में चार चाँद लग जाता है। यहाँ कुछ ही घंटे गुज़ारनेवाला ख़ुद को बहुत हलका-फुलका और हर तरह की शारीरिक और मानसिक तनाव से आज़ाद महसूस करने लगता है।

नाश्ते के बाद बच्चों ने खेलना-कूदना और इधर-उधर घूमना शुरू कर दिया। घूमते-घूमते वह बाग़ के उस हिस्से में जा पहुँचे जहाँ तरह-तरह के गुलाबों की क्यारियाँ थीं। काले गुलाब तो इतने ख़ूबसूरत थे कि जी चाहता था उन्हें देखे ही जाओ। असल में उनका रंग तो लाल ही होता है मगर इतना गहरा कि काला लगने लगता है। बच्चे इन गुलाबों को देख ही रहे थे कि उन्हें भिनभिनाहट की आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने देखा कि शहद की एक मक्खी बहुत ही ख़ूबसूरत और ताज़ा



गुलाब के फूल पर मंडरा रही थी। सुबह दादा अब्बू का सुनाया हुआ क़ुरआन का तर्जमा उनके दिमाग़ों में ताज़ा था। अब जो शहद की मक्खी दिखाई दी तो वे उसे ग़ौर से देखने लगे। शहद की मक्खी बहुत धीरे से फूल के बीचों-बीच में बैठ गई और फिर उसने अपना सिर फूल की जड़ में घुसा दिया। थोड़ी देर वह इसी हालत में रही, जिसके बाद उसने सिर उठाया और उड़कर नज़दीक के दूसरे फूल पर जा बैठी। वह इसी तरह थोड़ी देर एक फूल पर बैठती और फिर उड़कर दूसरे पर चली जाती। वे लोग वहीं बैठकर उसे देखते रहे। थोड़ी देर बाद उन्हें महसूस हुआ कि वहाँ सिर्फ़ एक वही मक्खी नहीं है, बल्कि बहुत-सी मक्खियाँ कई फूलों पर यही काम कर रही हैं । वह बारी-बारी एक से दूसरे फूल पर जाती हैं और अपना सिर उसमें अन्दर की तरफ़ घुसाती हैं और फिर वहाँ से उड़ जाती हैं। इसी बीच उन्हें एक ऐसी मक्खी दिखाई दी जो फूल पर बैठने के बाद अपने पिछले पैरों को तेज़ी से हिला रही थी। उसके



पिछले पैर दूसरों के मुक़ाबले मोटे और चपटे थे और उनपर लम्बे घने बाल थे। उसके पैरों के हिलने से फूल के अन्दर मौजूद कुछ डंठलों से पॉउडर जैसी कोई पीले रंग की चीज़ निकल-निकलकर उसके पैरों पर जमी जा रही थी। ऐसी कई मक्खियाँ उन्होंने देखीं जिनके पिछले पैरों पर पीले पॉउडर के गुच्छे मौजूद थे। बच्चों ने उन मक्खियों को देखा तो बहुत शौक़ से, मगर यह भी उनके लिए सुबह के सबक़ जैसा था, इसलिए कि मक्खियों के इस काम को समझना उनके लिए बहुत कठिन था और इसके लिए भी उन्हें अपने दादा अब्बू की मदद की ज़रूरत थी, लेकिन उनके दादा अब्बू उस वक़्त उनके पास में न थे, बल्कि वे आराम से क्यारी के पास लेटे हुए धूप के मज़े ले रहे थे।

बच्चे जब थोड़ी देर बाद इधर-उधर घूम-फिरकर वापस आए तो सब लोग

बोटैनिकल गार्डेन से घर के लिए रवाना हो गए। रास्ते में बच्चों ने जो देखा था वह दादा अब्बू से बताया और ख़ाहिश ज़ाहिर की कि वह उन्हें न सिर्फ़ सुबह के क़ुरआन के तर्जमे में जो बातें आई थीं उनको तफ़सील से बताएँ, बल्कि उन्होंने जो कुछ अपनी आँखों से देखा है उसकी भी वज़ाहत (व्याख्या) करें। दादा अब्बू को दिन में कुछ ज़रूरी काम थे, इसलिए उन्होंने कहा कि वे रात तक इन्तिज़ार कर लें। रात के खाने के बाद वे इंशाअल्लाह उन्हें बहुत-सी ऐसी बातें बताएँगे जिसके बाद उन्हें सुबह का दर्स भी आसानी से समझ में आ जाएगा और वह भी जो बोटैनिकल गार्डेन में देखा था।

बच्चों को शहद की मक्खी की बातों में सचमुच इतनी दिलचस्पी आ रही थी कि उनके लिए दिन काटना मुशकिल हो रहा था। रात में खाने के बाद जब सब लोग जमा हुए तो ऐमन ने बहुत बेताबी के साथ दादा अब्बू से कहा—"हाँ दादा अब्बू! अब आप हमें शहद की मक्खी के बारे में बताइए, जिसका ज़िक्र क़ुरआन में आया है और जिसे हम लोगों ने आज सुबह बोटैनिकल गार्डेन में देखा भी था।"

दादा अब्बू बच्चों की जानने की ख़ाहिश देखकर बहुत ख़ुश हुए और बोले—

"मुझे बहुत ख़ुशी है कि तुम लोगों में अल्लाह की निशानियों को जानने और समझने की इतनी चाहत है। मैं ज़रूर तुम्हें शहद की मक्खी के बारे में बहुत-सी बातें बताऊँगा, जिन्हें जानकर तुम न सिर्फ़ क़ुरआन की आयतों को अच्छी तरह समझ सकोगे, बल्कि तुमने जो कुछ बोटैनिकल गार्डेन में देखा है वह भी अच्छी तरह तुम्हारी समझ में आ जाएगा। अच्छा है कि हम शहद की मक्खी के बारे में बात इस तरह शुरू करें जिस तरह क़ुरआन में आई है।"

"ठीक है दादा अब्बू! तो सबसे पहले यह बताइए कि क्या अल्लाह तआला शहद की मक्खी जैसे जीव-जन्तुओं पर भी वह्य भेजता है? हम तो समझते थे कि वह्य तो सिर्फ़ पैग़म्बरों ही पर उतरती है।" शिफ़ा ने हैरत से पूछा।

दादा अब्बू ने कहा, "देखो भई, यह तो एक बात को दिल में डालने जैसा है। मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद और मौलाना मुहम्मद शफ़ी साहब (रह॰) ने तो अपने

क़ुरआन के तर्जमों में वह्य की जगह इन्हीं लफ़्ज़ों का इस्तेमाल किया है। यूँ अगर ग़ौर करो तो हम-तुम भी कोई काम उसी वक़्त करते हैं जब वह हमारे जी में आता है, और जी में भी ख़ुद-ब-ख़ुद तो आता नहीं, कोई डालता है तभी तो आता है। सोचो, ख़ुद इनसान भी क्या है, बस अनगिनत सेल्स का एक ढेर ही तो है और ये सेल भी हाड़-मांस के टुकड़े हैं, जो न बोल सकते हैं और न ही दिमाग़ रखते हैं, लेकिन जब उनका पैदा करनेवाला उन टुकड़ों को कुछ सोचने का हुक्म देता है, तो सोचने लगते हैं और हमें यह ख़याल होता है कि जैसे हम ख़ुद अपनी ताक़त और सलाहियत से सोच रहे हैं। बस इसी तरह समझ लो कि शहद की मक्खी की अपनी तो कोई हैसियत नहीं, लेकिन जब अल्लाह उसके दिल में एक बात डालता है, या करने का हुक्म देता है तो वह उसी तरह करती चली जाती है और यही हुक्म उसके लिए वह्य कहलाता है। क्या तुममें से किसी को याद है कि क़ुरआन में अल्लाह ने शहद की मक्खी को सबसे पहले क्या काम करने का हुक्म दिया है?"

ऐमन ने जल्दी से कहा–



"जी हाँ, दादा अब्बू! अच्छी तरह याद है। अल्लाह ने शहद की मक्खी को वह्य के ज़रिए सबसे पहले अलग-अलग जगहों पर छत्ते यानी अपना घर बनाने का हुक्म दिया है।"

"बिलकुल ठीक! वह शहद की मक्खी के दिल में यह बात डालता है कि वह पहाड़ों, पेड़ों और लकड़ी की टट्टियों पर चढ़ाई हुई बेलों में अपना घर बनाए।" दादा अब्बू ने ऐमन की ताईद की।

"इसका मतलब यह हुआ कि शहद की मक्खी सिर्फ़ उन्हीं जगहों पर अपने घर बनाती है जिनका बयान क़ुरआन में आया है।" शिफ़ा ने कहा।

"मतलब तो यही है, लेकिन हमारे जैसे कीटविज्ञान (Entomology) के विद्यार्थी कुछ और भी मतलब निकालने की कोशिश करते हैं जो ठीक भी हो सकता है और ग़लत भी।"

"दादा अब्बू! बताइए, आप इसके अलावा इसका दूसरा और क्या मतलब निकालते हैं?" ऐमन ने पूछा।

"देखो भई, बात यह है कि क़ुरआन में दिए गए हर जगह से हमें शहद की मक्खियों की किसी ख़ास क़िस्म की नस्ल जुड़ी दिखाई देती हैं। देखा जाए तो दुनिया-भर में शहद की मक्खियों की नौ क़िस्में पाई जाती हैं, जिनमें से सिर्फ़ चार ही से शहद मिलता है। पहली क़िस्म एपिस डोरसेटा (Apis Dorsata) कहलाती है। यह लगभग 25-30 सेंटी मीटर बड़ी होती है। यह सिर्फ़ पहाड़ों या ऊँची इमारतों, जैसे बड़ी मस्जिदों की ऊँची मेहराबों में खुली हुई जगहों पर ही अपने छत्ते बनाती है। इन शहद की मक्खियों को पाला नहीं जा सकता, ये बहुत ख़तरनाक भी होती हैं। अगर किसी आदमी को ये मक्खियाँ ज़्यादा तादाद में काट लें तो उसकी मौत भी हो सकती है। दूसरी और तीसरी क़िस्मों के नाम एपिस सिराना (Apis Cerana) और एपिस मिलिफ़ेरा (Apis Millifera) हैं, जो 18-20 सेंटी मीटर बड़ी होती हैं। ये अपने छत्ते पेड़ों पर छुपी हुई जगहों पर बनाती हैं। इस क़िस्म की मक्खियाँ अपने छत्ते कभी भी

पहाड़ों या ऊँची इमारतों में खुली हुई जगहों में नहीं बनातीं। इन दोनों क़िस्म की मक्खियों को शहद हासिल करने के लिए पाला भी जा सकता है। आख़िरी चौथी क़िस्म का नाम एपिस फ़्लोरिया (Apis Floria) है। इस क़िस्म की शहद की मक्खियों से बहुत कम शहद मिलता है। यह सिर्फ़ 12-15 सेंटी मीटर बड़ी होती है और अपना छत्ता झाड़ियों और टट्टियों पर चढ़ाई हुई बेलों (लताओं) में बनाती है। हमें मक्खियों की क़िस्मों और उनके घर बनाने की जगहों में एक सम्बन्ध नज़र आता है जिसे देखकर ऐसा लगता है जैसे अल्लाह तआला ने छत्ता बनाने की जगहें बताते हुए शहद देनेवाली मक्ख्यिों की इन ख़ास क़िस्मों की तरफ़ भी इशारा कर दिया है। अब हमारा यह ख़याल ठीक भी हो सकता है और ग़लत भी।" दादा अब्बू ने बहुत खोलकर बताया।

यह सुनकर शिफ़ा ने कहा—

"सचमुच दादा अब्बू! लगता तो कुछ ऐसा ही है। हो सकता है आपका अन्दाज़ा सही हो। मगर क्या आपको नहीं लगता कि यही उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से मुक़र्रर की हुई राहें हैं जिनपर चलकर वे अपना घर बनाती है?"

"तुम्हारा ख़याल ठीक है, लेकिन यह इन राहों का एक छोटा-सा हिस्सा है। असल में अल्लाह की हमवार और बराबर की हुई राहें तो शहद की मक्खी की पूरी जीवन-व्यवस्था की तरफ़ इशारा है, जिसमें न सिर्फ़ अलग-अलग क़िस्मों का अलग-अलग जगहों पर छत्ते बनाना शामिल है, बल्कि उनकी ज़िन्दगी के विभिन्न काम, जैसे फूलों और फलों की तलाश, उनकी ख़बर अपनी साथी मक्ख्यिों को देना, फूलों और फलों का रस चूसना और फिर उससे शहद बनाना, उसे जमा करना और फिर अपने लारवों और रानी मक्खी को खिलाना, जातियों के हिसाब से अपने कामों को आपस में बाँट लेना, सभी कुछ शामिल है।"

"दादा अब्बू! ये सब बातें तो बहुत ही मनमोहक और अजीबो-ग़रीब लगती हैं। क्यों न आप हमें इनके बारे में ज़रा तफ़सील से बताइए!" शिफ़ा ने कहा और उसके

साथ ही ऐमन और अमीन भी ज़रा खिसककर दादा अब्बू के क़रीब हो गए। उन लोगों को शहद की मक्खियों की बातें सुनने में बड़ा मज़ा आ रहा था। उन लोगों की दिलचस्पी देखकर दादा अब्बू ने कहना शुरू किया—

"शहद की मक्खी के छत्ते में आम तौर पर पचास से अस्सी हज़ार तक मक्खियाँ होती हैं, मगर इनमें सिर्फ़ एक ही मक्खी अंडे देने के क़ाबिल होती है, जिसे रानी मक्खी कहा जाता है।"

"क्या ये हज़ारों मक्खियाँ उस एक मक्खी की औलाद होती हैं? यानी उसी के अंडों से पैदा होती हैं?" ऐमन ने हैरत से पूछा!

"रानी मक्खी का क़द दूसरी मक्खियों के मुक़ाबले में ज़रा बड़ा होता है और उसमें अंडे देने की ज़बरदस्त सलाहियत होती है। किसी भी छत्ते में मौजूद सारी मक्खियाँ उसी की औलाद होती हैं। शुरू-शुरू में तो वह कई-कई हज़ार अंडे रोज़ाना दे सकती है।"

"शुरू-शुरू से आपका क्या मतलब है?" ऐमन ने जानना चाहा।

"शुरू-शुरू में जब वह अपने अस्ल छत्ते से अलग होकर आती है, उसका छत्ता बहुत छोटा होता है, जिसमें वह और उसकी गिनी-चुनी काम करनेवाली साथी मक्खियाँ और कुछ नर मक्खियाँ ही होती हैं। अपने छत्ते को बड़ा करने के लिए उसे ज़्यादा अंडे देने पड़ते हैं।"

"ये नर मक्खियाँ भला कैसी होती हैं?" "शहद की मक्खी के हर छत्ते में आम तौर पर तीन जातियों की मक्खियाँ होती हैं। अधिक संख्या काम करनेवाली मक्खियों की होती है। कुछ नर मक्खियाँ होती हैं जो काम करनेवाली मक्खियों से क़द में थोड़ी बड़ी होती हैं। उन्हें अंग्रेज़ी भाषा में ड्रोन (Drone) कहते हैं। इनका काम तुम्हें अभी थोड़ी देर में मालूम हो जाएगा। ड्रोन की ज़रूरत छत्ता अलग करते वक़्त ही पड़ती है। इसके बाद ये मक्खियाँ निकम्मों की तरह छत्ते में पड़ी रहती हैं। वे कोई काम नहीं करतीं। अगर छत्ते में उनके खाने की चीज़ काफ़ी तादाद में मौजूद

हो तो काम करनेवाली मक्खियाँ इन निकम्मी मक्खियों को बर्दाश्त कर लेती हैं लेकिन अगर इत्तेफ़ाक़ से खाने की कमी हो जाए तो फिर काम करनेवाली मक्खियाँ उन्हें मार डालती हैं। इन दो जातियों के अलावा तीसरी जाति रानी मक्खी की है। हर छत्ते में सिर्फ़ एक रानी मक्खी होती है, मगर जब एक छत्ते से कई छत्ते बनाने का वक़्त आता है तब कई रानियाँ भी पैदा हो जाती हैं। एक लिहाज़ से देखो तो नर और रानी मक्खियाँ ज़रूरत के वक़्त ही पैदा होती हैं।"

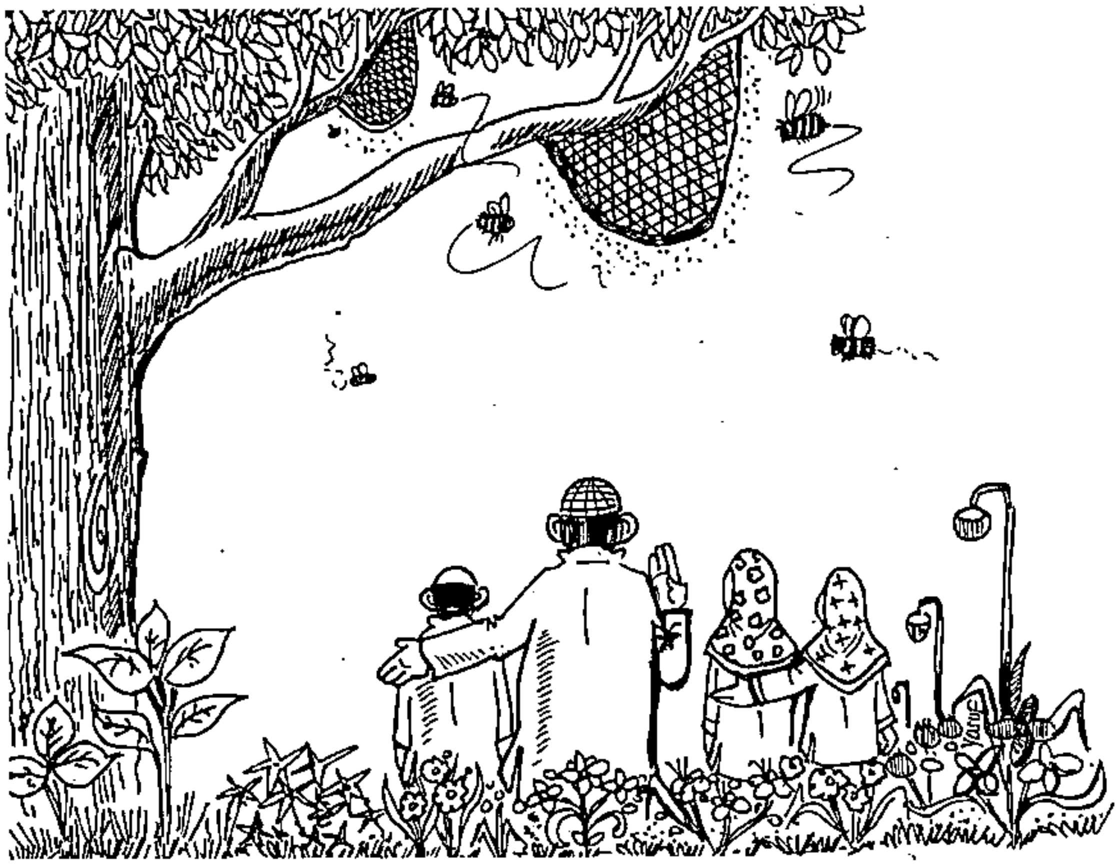
"दादा अब्बू! यह तो बहुत अनोखी बात है! क्या ऐसा भी हो सकता है कि शहद की मक्खी अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़रूरत पड़ने पर ही विभिन्न जातियों को पैदा कर सके। और हाँ, यह ज़रूरत भी भला कब पैदा होती होगी?" शिफ़ा ने हैरत से पूछा।

"शहद की मक्खी की मर्ज़ी नहीं, बल्कि अल्लाह की मर्ज़ी कहो। हक़ीक़त में यही तो वे राहें हैं जिन्हें अल्लाह ने उसके लिए मुक़र्रर किया है। पहले तो तुम यही समझ लो कि छत्ते में विभिन्न जातियों की मक्खियाँ पैदा करने की ज़रूरत कब पड़ती है। अस्ल में बात यह है कि जब तक छत्ता छोटा होता है, उस वक़्त तक छत्ते के विभिन्न काम करने के लिए काम करनेवाली मक्खियों ही की ज़रूरत होती है, लेकिन जब छत्ता बहुत बड़ा हो जाता है तब उसका बँटवारा छोटे हिस्सों में होता है ताकि हर छोटा हिस्सा भी अपने तौर पर बड़ा हो सके। शहद की मक्खियों में अपनी आबादियों को बढ़ाने का यह क़ुदरती तरीक़ा है। मगर यह छोटे हिस्से उस वक़्त तक ख़ुद को बढ़ाने के क़ाबिल नहीं होते जब तक कि छत्ते में अंडा देनेवाली कई रानियाँ मौजूद न हों। छत्ते में जितनी रानियाँ होंगी छत्ते को उतने ही हिस्सों में बाँटा जा सकेगा। हर छोटे हिस्से के साथ एक-एक रानी और कुछ काम करनेवाली मक्खियाँ चली जाएँगी। रानी अंडे देकर अपना छत्ता बढ़ा लेगी।"

"दादा अब्बू! छत्ते में काम करनेवालियों और रानियों की ज़रूरत तो समझ में आ गई, मगर उन ड्रोन (Drone) की क्या ज़रूरत होती है, यह तो अभी तक समझ में नहीं आया।" शिफ़ा ने पूछा।

"ज़रा सब्र करो, उनकी ज़रूरत भी अभी तुम्हारी समझ में आ जाएगी। अल्लाह ने रानी मक्खी को एक बहुत अनोखी सलाहियत दी है और वह यह कि एक ही समय में वह दो तरह के अंडे दे सकती है। एक वह जिनसे काम करनेवाली मक्खियाँ और रानियाँ पैदा होती हैं और दूसरे वह जिनसे सिर्फ़ नर मक्खियाँ पैदा होती हैं।"

"दादा अब्बू! यह तो सचमुच बहुत ही अनोखी और हैरत में डालनेवाली बात है कि एक ही मक्खी और वह दो तरह के अंडे दे! ऐसा भला किस तरह हो सकता है?" ऐमन ने पूछा।



"यह हैरत में डालनेवाली सलाहियत उसे एक पदार्थ से मिलती है जो उसके पेट के पिछले हिस्से में मौजूद एक छोटी-सी थैली में भरा रहता है। रानी मक्खी को वह पदार्थ नर मक्खियों से हासिल होता है। जब छत्ते के बँटवारे से पहले रानियाँ और

नर मक्खियाँ पैदा होती हैं तो वे छत्ता छोड़कर हवा में इधर-उधर उड़ते रहते हैं और उसी समय रानियाँ नर मक्खियों से यह पदार्थ हासिल कर लेती हैं और उसे लेकर छत्ते में वापस आती हैं। इसके बाद ही छत्ते का बँटवारा होता है और हर नई रानी थोड़ी-थोड़ी काम करनेवाली मक्खियाँ अपने साथ लेकर अपना नया छत्ता बनाने चल देती हैं। सबसे ज़्यादा हैरान करनेवाली बात यह है कि नर मक्खियों से हासिल किया हुआ यह पदार्थ रानी मक्खी के शरीर में महीनों नहीं, बल्कि सालों सुरक्षित रहता है, जिसे रानी मक्खी ज़रूरत पड़ने पर ही इस्तेमाल करती है। इसका मतलब यह है कि जब वह समझती है कि काम करनेवाली मक्खियाँ या रानियाँ पैदा होना चाहिए तब वह अपने अंडों को उस पदार्थ की मदद से बच्चा पैदा करने योग्य बना लेती है और जब समझती है कि नर मक्खियाँ पैदा होनी चाहिए तब वह इस पदार्थ का इस्तेमाल नहीं करती और ऐसे ही अंडे दे देती है।"

"दादा अब्बू! हमारे लिए यह समझना बहुत मुश्किल है कि एक छोटी-सी मक्खी इतनी बुद्धिमान होती है कि वह यह फ़ैसला कर सकती है कि उसे कब और कैसे अंडे देना है, और अगर यह मान भी लिया जाए कि यह अक़्ल अल्लाह ने उसे दे ही दी है तो भी यह बात बिलकुल ही हमारी समझ से बाहर है कि बच्चा पैदा होनेवाले जिन अंडों से अभी तक सिर्फ़ काम करनेवाली मक्खियाँ पैदा हो रही थीं, उन्हीं अंडों से ज़रूरत पड़ने पर रानी मक्खियाँ पैदा होने लगती हैं। भला यह किस तरह मुमकिन हो सकता है?" शिफ़ा ने अपनी उलझन ज़ाहिर करते हुए कहा।

"शिफ़ा बेटे! तुम्हारी परेशानी और उलझन अपनी जगह बिलकुल ठीक है, मगर वह इनशा-अल्लाह बहुत जल्द दूर हो जाएगी। पहली बात जो तुम लोगों के ज़ेहनों में रहनी चाहिए वह यह है कि यह सूझ-बूझ और अक़्लमन्दी शहद की उस मक्खी की अपनी नहीं है, बल्कि यह तो अल्लाह की मुक़र्रर की हुई राहें हैं जिनपर वह चली जा रही है। दूसरी बात यह है कि अल्लाह एक ख़ास वक़्त पर काम करनेवाली मक्खियों के दिल में डालता है कि अब वक़्त आ गया है कि कुछ लारवों के खाने में ख़ास तरह का बदलाव ले आया जाए। अन्ततः खाने का यही बदलाव उन लारवों को

काम करनेवाली या रानी या नर मक्खियों में बदल देता है।'' दादा अब्बू ने समझाया।

''दादा अब्बू! यह तो कोई जादू की कहानी मालूम होती है, जिसमें जादू के कुछ बोल आदमी को तोता बना देते हैं।'' अमीन ने हँसकर कहा!

''बेटे! इसमें जादू की कोई बात नहीं है। शहद की मक्खी को पैदा करनेवाले ख़ुदा ने कुछ उसूल बनाए हैं। जब वह किसी ख़ास वक़्त पर कोई उसूल अपनाती है तो उसका वैसा ही नतीजा निकलता है। जब छत्ता छोटा होता है तब रानी अंडे देती रहती है और छत्ते में काम करनेवालियाँ अल्लाह के हुक्म से उन अंडों से निकलनेवाले लारवों को बेहद मामूली भोजन खिलाती हैं जिससे वे सिर्फ़ काम करनेवाली मक्खियों ही में तब्दील होती हैं। मगर जब छत्ते के बँटवारे का वक़्त आता है तब रानी मक्खी मादा मक्खी और नर मक्खी पैदा करनेवाले दोनों तरह के अंडे देती है। काम करनेवाली मक्खियाँ पहले तो छत्ते में दो तरह के ख़ाने (Boxes) बनाती हैं, एक काम करनेवाली मक्खियों के लारवों से ज़रा बड़े और उभरे हुए होते हैं और दूसरे ज़्यादा बड़े और छत्ते में नीचे की तरफ़ लटके हुए। पहली क़िस्म के ख़ानों में मादा या काम करनेवाली मक्खी और दूसरी क़िस्म के खानों में नर मक्खी पैदा करनेवाले अंडे रखे जाते हैं। पहली क़िस्म के ख़ानो से निकलनेवाले लारवों को काम करनेवाली मक्खियाँ थोड़ा अच्छा भोजन और दूसरे प्रकार के ख़ानों से निकलनेवाले लारवों को बहुत अच्छा भोजन खिलाती हैं, जो उन काम करनेवालियों के ख़ास ग़ुदूदों (ग्रंथियों) से निकलता है और रायल जेल कहलाता है। इस भोजन में प्रोटीन की मिक़दार बहुत ज़्यादा होती है। भोजन का यह अन्तर पहले लारवों को नर और दूसरे लारवों को रानियाँ बना देता है।'' दादा अब्बू ने बहुत तफ़सील से बताया। शहद की मक्खी के कारनामे सचमुच किसी क़िस्से-कहानी से कम न थे, जिन्हें बच्चे हैरत और बहुत दिलचस्पी से ध्यान लगाए सुन रहे थे। ऐमन को याद आया कि काम करनेवाली मक्खियों के कामों का तो अभी कोई ज़िक्र ही नहीं आया। यही सोचते हुए उसने पूछा—

"दादा अब्बू! आपने थोड़ी देर पहले बताया था कि काम करनेवाली मक्खियाँ कई काम करती हैं, मगर आपने उनके बारे में तो अभी तक कुछ भी नहीं बताया। काम करनेवाली मक्खियाँ आख़िर सब कामों को किस तरह पूरा कर लेती होंगी?"

"यह तो तुम समझ ही गए कि अंडे देने और उनसे बच्चे पैदा करने का काम तो रानी और नर मक्खियों के द्वारा पूरा हो ही जाता है, लेकिन छत्ते में दूसरे और भी कई काम होते हैं, जिन्हें ये मक्खियाँ आपस में बाँटकर करती हैं।"

"ये मक्खियाँ भला कामों का बँटवारा आपस में कैसे कर लेती होंगी?" शिफ़ा ने जानना चाहा।

"हम कहते तो यही हैं कि मक्खियाँ अलग-अलग कामों को आपस में बाँट लेती हैं मगर हक़ीक़त यह है कि वे उन राहों पर चल रही होती हैं जो अल्लाह ने उनके लिए मुक़र्रर की हैं और इस तरह उनके बीच कामों का बँटवारा ख़ुद-ब-ख़ुद ही हो जाता है।"

"फिर भी दादा अब्बू! कोई तो तरीक़ा ज़रूर ही होगा जिसके ज़रिए उनके बीच कामों का बँटवारा होता होगा।" ऐमन ने पूछा।

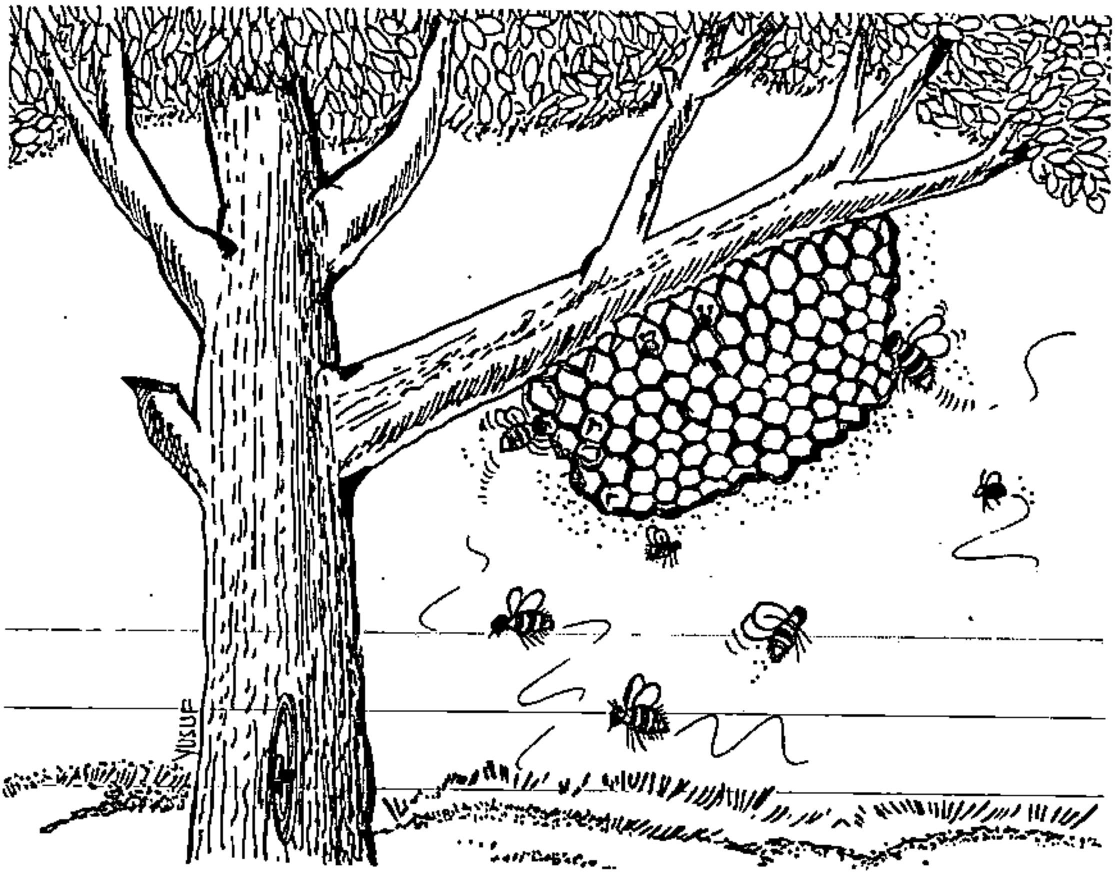
"कामों का बँटवारा अल्लाह के हुक्म से होता है। उसने एक उसूल बना दिया है कि बीस दिन से कम उम्र की मक्खियाँ छत्ते से बाहर नहीं जाएँगी, बल्कि वहीं रहते हुए छत्ते के अन्दर के काम करेंगी, जैसे ख़ानों (Boxes) की सफ़ाई, लारवों और रानी माँ को खाना खिलाना और छत्ते में पैदा होनेवाले लारवों के लिए नए ख़ाने (Boxes) बनाना।"

"मगर छत्ते के अन्दर रहते हुए वे भला नए ख़ाने (Boxes) किस तरह बनाएँगी? क्या नए ख़ाने बनाने के लिए उन्हें बाहर से कोई सामान लाने की ज़रूरत नहीं होगी?" अमीन ने पूछा।

"छत्तों के अन्दर नए ख़ाने बनाने के लिए मक्खियों को बाहर से कोई सामान लाने की ज़रूरत नहीं होती। वे ये ख़ाने मोम की मदद से बनाती हैं जिसे वे ख़ुद ही

पैदा कर लेती हैं।"

"क्या हक़ीक़त में! दादा अब्बू! आप तो इन मक्खियों के बारे में ऐसी अनोखी बातें हमें बता रहे हैं, जिन्हें सोचना भी मुश्किल है।" ऐमन ने कहा।



"बीस दिन से कम उम्रवाली मक्खियों के पेट में कुछ छेद होते हैं, जिनसे मोम की परतें निकलना शुरू हो जाती हैं। मक्खियाँ इस मोम को अपने मुँह में लेकर चबा-चबाकर गूँधती हैं और फिर उसकी मदद से छह कोनोंवाले ख़ाने (षट्कोण) बनाती हैं। हर ख़ाने (Box) की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई एक जैसी होती है। उन्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी माहिर इन्जीनियर ने उन्हें पूरे नाप-तौल के बाद तैयार किया है। छत्ते के ये ख़ाने आरकीटेक्ट के अनोखे नमूने नज़र आते हैं। हर छह ख़ानों के बीच वैसा ही एक ख़ाना ख़ुद-ब-ख़ुद तैयार हो जाता है।"

"दादा अब्बू! आप कह रहे हैं कि छत्ते के सभी ख़ाने (Boxes) एक जैसे होते हैं, मगर थोड़ी देर पहले तो आपने बताया था कि नर और रानी मक्खियों के ख़ाने अलग-अलग साइज़ के होते हैं।" शिफ़ा ने पूछा।

"हाँ, वह भी ठीक है। बात यह है कि जब नर और रानी मक्खियाँ पैदा करने का वक़्त आता है तब अल्लाह काम करनेवाली उन मक्खियों के दिल में यह बात डाल देता है, जिसके बाद वे कुछ ख़ाने नर मक्खियों के लारवों के लिए बनाती हैं, जो ज़रा बड़े और उभरे हुए होते हैं और कुछ ख़ाने रानियों के लिए, जो कुछ बड़े और नीचे की तरफ़ लटके हुए होते हैं।"

"दादा अब्बू! यह तो सचमुच शहद की मक्खियों का ऐसा हैरतअंगेज़ कारनामा है जो बिना अल्लाह की मर्ज़ी और रहनुमाई के मुमकिन ही नहीं हो सकता।" शिफ़ा ने कहा।

दादा अब्बू ने कहा : "बेशक" और अपनी बात को आगे बढ़ाया, "बीस दिन बाद ये मक्खियाँ छत्ते से बाहर जाना शुरू कर देती हैं, लेकिन पहले कुछ दिन छत्ते के आस-पास ही चक्कर काटती हैं और ज़्यादा दूर नहीं जातीं। मगर कुछ दिन बाद आम काम करनेवालियों की तरह दूर तक जाकर मुख़्तलिफ़ काम करना शुरू कर देती हैं, जैसे फूलों और फलों की तलाश और फिर उनके बारे में अपनी साथी मक्खियों को ख़बर देना, फूलों का रस इकट्ठा करके उसका शहद बनाना और उसे छत्ते के ख़ास ख़ानों में जमा करना और नए लारवों के खाने के लिए फूलों का पराग जमा करना इत्यादि।"

"एक मक्खी इधर-उधर घूमकर फूल तो ज़रूर तलाश कर लेती होगी, मगर उसकी ख़बर वह भला अपनी साथियों को किस तरह देती होगी, यह बात तो कुछ समझ में नहीं आती!" ऐमन ने कुछ आश्चर्य से पूछा।

"काम करनेवाली मक्खियों में से कुछ ही मक्खियाँ ऐसी होती हैं, जो भोजन तलाश करने का काम करती हैं। उन्हें तलाश करते वक़्त जब कहीं रस भरे फूल या

फल मिल जाते हैं तो वे फ़ौरन ही अपने छत्ते में वापस आती हैं। वे छत्ते में आकर नाच दिखाती हैं और उसके ज़रिए अपने साथियों को उस जगह की ख़बर देती हैं, जिसे देख और समझकर दूसरी मक्खियाँ भी उस जगह पहुँच जाती हैं और रस इकट्ठा करने लगती हैं।"

"दादा अब्बू! आप हमें शहद की मक्खी के बारे में ऐसी-ऐसी अनोखी बातें बता रहे हैं, जो सचमुच किसी कहानी-क़िस्से से कम नहीं! हमें बताइए कि मक्खी का नाच किस तरह का होता है?" ऐमन ने बहुत दिलचस्पी से पूछा।

"मान लो, कुछ रस भरे फूल छत्ते से सिर्फ़ पन्द्रह-बीस मीटर के अन्दर ही कहीं मौजूद हैं। तब ख़बर लानेवाली मक्खी छत्ते में आकर ऊपर से नीचे आते हुए एक छोटे दायरे की शक्ल में (वृत्ताकार) चक्कर लगाने लगती है। इसे गोल नाच या रॉउंड डांस कहते हैं। साथी मक्खियाँ उसे देखकर उड़ती हैं और छत्ते के आस-पास चक्कर लगाकर फूलों को ढूँढ लेती हैं।"

"और अगर फूलों की वह जगह छत्ते से कहीं दूर हो तब क्या होता है?"

अमीन ने पूछा।

"इस हालत में मक्खी अपने नाच के तरीक़े में बदलाव ले आती है। अब वह सिर्फ़ एक बड़ा दायरा (वृत्त) बनाते हुए नाचती है और साथ ही दायरे के अन्दर एक सीधी लाइन पर भी चलती है जिससे वह दायरा दो दायरों में बँट जाता है और ऐसा लगता है कि दो दायरे चिपटे हुए हैं। एक-दूसरे के ऊपर बन रहे हैं। देखा जाए तो अंग्रेज़ी गिनती के आठ की शक्ल बनाती है। अगर मक्खी नाचते हुए बीच की लाइन पर नीचे से ऊपर जाए तो भोजन की जगह सूरज की दिशा में कहीं होगी, लेकिन अगर मक्खी ऊपर से नीचे आए तो वह जगह सूरज से उलटी दिशा में होगी। अलबत्ता साथी मक्खियों को यह देखना होगा कि नाचनेवाली मक्खी सूरज की तरफ़ से खींची हुई एक फ़र्ज़ी (काल्पनिक) रेखा के साथ बीच की लाइन पर चलते हुए कितने डिगरी का कोण बना रही है। साथी मक्खियाँ इसी कोणीय दिशा पर सूरज

की या उसकी उल्टी तरफ़ जाकर फूलों का पता लगाएँगी। कहो, यह है ना हैरान करनेवाला तरीक़ा!" दादा अब्बू ने विस्तार से यह बताते हुए कहा।

"बेशक" यह तरीक़ा तो बहुत हैरान करनेवाला है" ऐमन बोली।

"तुम्हें यह जानकर और भी हैरानी होगी कि नाचनेवाली मक्खी तो यह ख़बर भी अपने साथियों को देती जाती है कि वह जिस जगह का पता लगाकर आई है वहाँ रस कितनी तादाद में मौजूद है।"

"वाक़ई यह तो और भी अजीब बात है।" अमीन ने कहा।

"ख़बर देनेवाली मक्खी नाचते वक़्त अपने पेट को दाएँ-बाएँ हिलाती रहती है। पेट जितनी तेज़ी से हिलेगा रस की तादाद उतनी ही ज़्यादा होने की ख़बर होगी। इसे देखकर ही साथी मक्खियों की संख्या उस जगह की तरफ़ उड़ान भरेगी। पेट को हिलाने की वजह से इस नाच का नाम वैग-टेल डांस है।"

तीनों बच्चे शहद की मक्खी की जादुई बातें बहुत हैरत से सुन रहे थे और सोच रहे थे कि ख़ालिक़ (पैदा करनेवाले खुदा) ने इन छोटी-छोटी मक्खियों को भी कैसे-कैसे कमालात से नवाज़ा है। यही सोचते हुए शिफ़ा ने पूछा—

"दादा अब्बू! आपने यह तो बताया ही नहीं कि शहद की मक्खी फूलों और फलों के रस से शहद किस तरह बना लेती है? हमने सुबह गुलाब के फूलों पर जो मक्खियाँ देखी थीं वे भी शायद इसी काम के लिए वहाँ आई होंगी।"

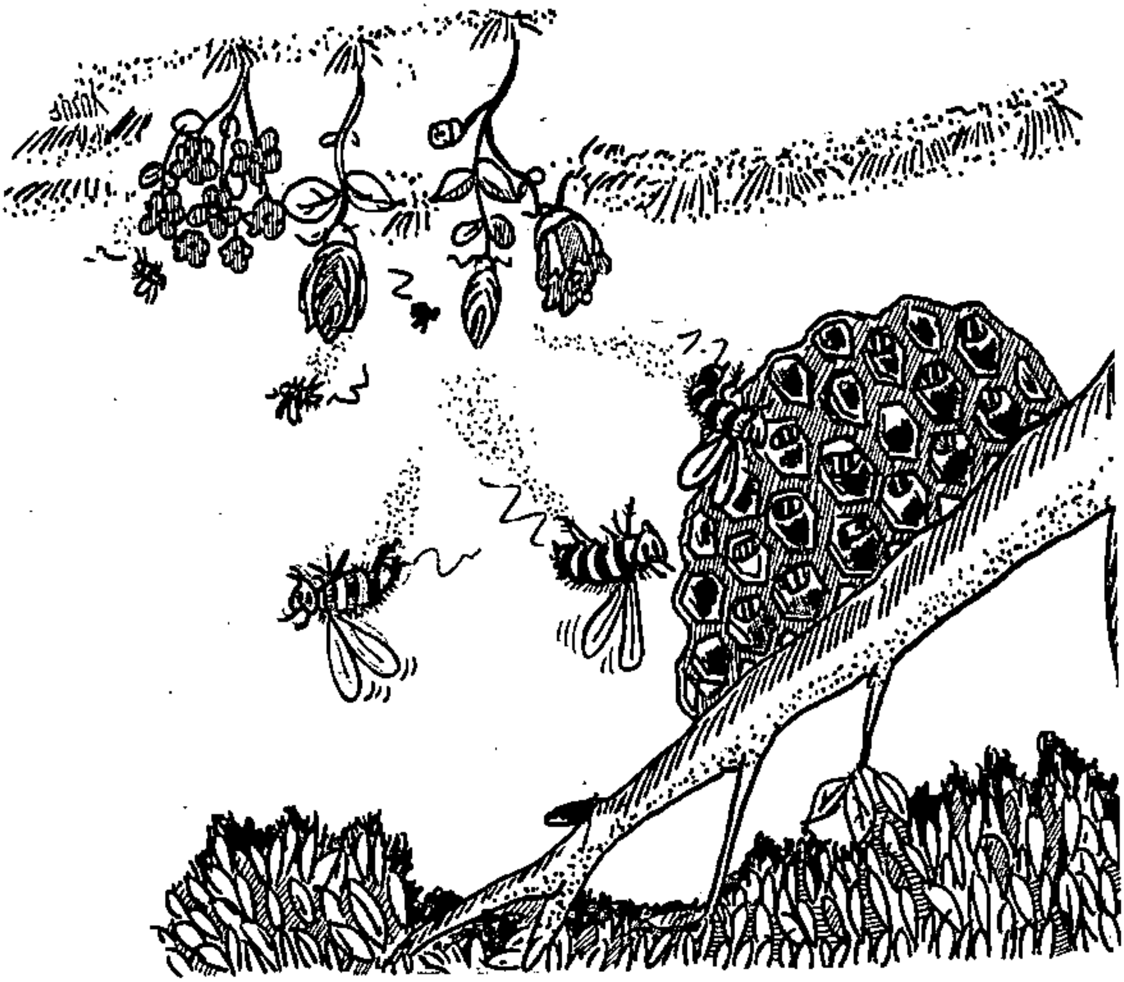
"गुलाब के फूलों पर आकर बैठनेवाली कुछ मक्खियाँ ज़रूर ही रस इकट्ठा करने आई होंगी। ये मक्खियाँ रस को चूसती नहीं, बल्कि उसे चाट-चाटकर अपनी चपटी ज़बान के पिछले हिस्से में जमा करती रहती हैं। वे एक फूल से दूसरे फूल पर इसलिए जाती हैं ताकि ज़्यादा रस जमा हो जाए।"

"क्या ये मक्खियाँ इस रस को साथ-साथ पीती नहीं रहतीं?" अमीन ने पूछा।

"मक्खियाँ इस रस को पीती नहीं, बल्कि जमा करके छत्ते की तरफ़ उड़ान भरती हैं। अल्लाह की क़ुदरत देखो कि रास्ते में इस रस में इनके मुँह का लुआब (लार) भी

शामिल होता रहता है और फिर एक कीमियाई अमल (रासायनिक क्रिया) के ज़रिए छत्ते में पहुँचते-पहुँचते रस शहद में बदल जाता है। छत्ते में पहुँचकर ये मक्खियाँ उस शहद को छत्ते में उगल देती हैं और फ़ौरन ही अगली उड़ान पर और रस इकट्ठा करने के लिए निकल जाती हैं। छत्ते के अन्दर काम करनेवाली मक्खियाँ इस शहद को उठाकर छत्ते के ख़ानों में जमा कर लेती हैं जो बाद में लारवों, रानी और काम करनेवाली मक्खियों के काम आता है।"

"वाह! वाह! क्या इन्तिज़ाम है, जिसे देखकर बेक़ायदा लोग शायद शर्मा जाएँ।" शिफ़ा ने कहा।



"दादा अब्बू! आपने यह क्यों कहा था कि हमने जो मक्खियाँ गुलाब के फूलों पर देखी थीं, इनमें से कुछ तो ज़रूर ही रस जमा कर रही होंगी। क्या दूसरी मक्खियाँ किसी और मक़सद से भी वहाँ आ रही होंगी?" ऐमन ने पूछा।

"याद करो, तुमने वहाँ कुछ मक्खियाँ ऐसी भी देखी थीं, जिनके पिछले पैरों में पीले रंग का पॉउडर लगा हुआ था। वे मक्खियाँ फूलों का पराग जमा कर रही थीं। उनके पिछले पैरों पर लम्बे-लम्बे घने बाल होते हैं, जिनमें फूलों का पराग अटक जाता है। पैर के इस हिस्से को पोलन बासकेट कहते हैं।"

"दादा अब्बू! ये मक्खियाँ इस पराग का भला क्या करती हैं?"

ऐमन ने पूछा।

"मैंने तुम्हें बताया था कि यह पराग पहले तीन दिन तक नए लारवों को खिलाया जाता है। पराग में प्रोटीन की मात्रा ज़्यादा होती है, जिससे उनमें ताक़त आ जाती है। तीन दिन बाद उनका भोजन उनकी जाति के अनुसार साधारण या थोड़ा उत्तम या सबसे उत्तम कर दिया जाता है, जिसे खाकर काम करनेवालियाँ, नर मक्खियाँ और रानियाँ बन जाती हैं। यूँ पराग जमा करते वक़्त इन मक्खियों के ज़रिए एक काम ख़ुद-ब-ख़ुद हो जाता है, जिससे मक्खियों का तो कुछ लेना-देना नहीं, मगर इनसानों को इससे बहुत फ़ायदा होता है।"

"भला वह क्या काम है जो मक्खियों के लिए बेकार, मगर इनसानों के फ़ायदे का होता है?" अमीन ने जानना चाहा।

"फूलों के बीच में आम तौर पर दो तरह के डंठल होते हैं। एक वे जिनमें से पीले रंग का पॉउडर यानी पराग निकलता है, जो तुमने मक्खियों के पैरों पर लगा देखा था, दूसरे वे डंठल होते हैं जिनकी जड़ में फूल से फल बनता है, जिसमें उस पौधे के बीज होते हैं। लेकिन फल और बीज उसी वक़्त बन पाते हैं जब उन डंठलों पर पराग लग जाए। इसे टेकनिकल ज़बान में परागण (Pollination) कहते हैं। ज़्यादातर पौधों में एक ही फूल में दोनों तरह के डंठल होते हैं, जहाँ परागण (Pollination)

का काम आसानी से होता रहता है, मगर कुछ पौधों, जैसे पपीते, इंजीर और खजूर में यह डंठल अलग-अलग फूलों पर होते हैं, जहाँ परागण का काम बहुत मुश्किल से होता है। आम तौर पर ऐसे पौधों में परागण का काम शहद की मक्खियों या दूसरे कीड़ों की मदद से होता है। जिन पौधों के फूलों में दोनों तरह के डंठल होते हैं, उनमें भी अगर एक फूल का पराग दूसरे फूल तक जा सके तो फ़सलों के बेहतर होने की संभावना बढ़ जाती है।'' दादा अब्बू ने बहुत तफ़सील से बताया।

यह सुनकर शिफ़ा ने पूछा—

''जब दोनों तरह के डंठल एक ही फूल में मौजूद हों, तब तो परागण हो ही जाएगा, फिर भला ऐसे पौधों में शहद की मक्खियों के ज़रिए परागण होने से फसलें बेहतर कैसे हो जाएँगी?''

''कभी किसी खेत में जाकर किसी फ़सल को देखो। तुम देखोगी कि एक ही फ़सल में कुछ पौधे दूसरे पौधों से ज़्यादा तन्दुरुस्त और मोटे हैं। इसकी वजह कुछ भी हो सकती है। हो सकता है उन पौधों को औरों के मुक़ाबले में हवा, पानी, खाद और रौशनी ज़्यादा मिल रही हो। अगर ऐसे पौधों के फूलों का पराग दूसरे फूलों तक जा सके तो बेहतर बीज बन सकते हैं और इस प्रकार कुल मिलाकर फ़सलें बेहतर हो जाती हैं। यानी उनकी पैदावार में बढ़ोत्तरी हो जाती है। यही वजह है कि आजकल किसानों को अपने खेतों के आस-पास शहद की मक्खियाँ पालने की सलाह दी जाती है। इससे शहद भी मिल जाता है और फ़सलों की पैदावार भी बढ़ जाती है।'' दादा अब्बू ने समझाया।

''सचमुच अल्लाह की हमवार की हुई राहों पर चलकर शहद की मक्खी सिर्फ़ अपना ही भला नहीं करती, बल्कि इनसानों का भी भला करती है।'' शिफ़ा ने अल्लाह की अज़्मत और बड़ाई का एतिराफ़ करते हुए सोचा।

ऐमन को याद आया कि क़ुरआन की आयतों में शहद की मक्खी के अन्दर से रंग-बिरंगे शरबत निकलने की बात भी कही गई है, इसका ज़िक्र तो अभी तक आया ही नहीं! यही सोचते हुए उसने पूछा :

"दादा अब्बू! शहद की मक्खी के अन्दर से जो रंग-बिरंगा शरबत निकलता है, वह क्या चीज़ होती है? इसके बारे में तो आपने कुछ बताया ही नहीं।"

"वह शरबत यही शहद होता है। शहद, मक्खी के जिस्म के अन्दर ही से तो निकलता है। वह फूलों का रस लाती है और फिर उसमें अपने मुँह का लुआब (लार) मिलाकर शहद बना देती है।"

"मगर इसे रंग-बिरंगा क्यों कहा गया है?" ऐमन ने सवाल किया!

"क्योंकि शहद तो होता ही रंग-बिरंगा है। कभी किसी दुकान पर देखो, तुम्हें तरह-तरह के रंगों के शहद नज़र आएँगे। कुछ का रंग हल्का होगा तो दूसरों का गहरा। इसी तरह कुछ शहद गाढ़े होते हैं तो दूसरे पतले।"

"ऐसा क्यों होता है? क्या अलग-अलग क़िस्म की मक्खियों का शहद भी अलग-अलग तरह का होता है?" अमीन ने सवाल किया!

"अस्ल में इसका ताल्लुक़ फूलों और फलों की क़िस्मों से है, जहाँ से शहद की मक्खी रस इकट्ठा करती है। पौधों के लिहाज़ से शहद का रंग और गाढ़ापन तो अलग होता ही है, मज़ा भी अलग हो जाता है। जब नीम के पेड़ों में बौर आता है तब उनके पास रहनेवाली मक्खियाँ उनके फूलों से शहद तैयार करती हैं, जो मज़े में कुछ कड़वा लेकिन सेहत के लिए फ़ायदेमन्द होता है। जामुन के फूलों से हासिल होनेवाला शहद गाढ़ा और गहरे रंग का होता है। मगर लीची के पेड़ों से हलके रंग का पतला शहद मिलता है, जिसमें लीची की ख़ुशबू तक आती है।"

"और दादा अब्बू! इस रंग-बिरंगे शरबत या शहद में लोगों की बीमारियों का इलाज भी तो बताया गया है, इसका क्या मतलब है?" ऐमन ने पूछा!

"बेशक, यह शहद इनसानों के लिए बहुत क़ीमती तोहफ़ा है, क्योंकि शहद में फूलों और फलों का जौहर (सत) मौजूद होता है, इसलिए वह न सिर्फ़ इन्तिहाई ताक़त बढ़ानेवाला होता है, बल्कि बहुत-सी बीमारियों में दवा का काम भी करता है। इसी लिए क़ुरआन इसे लोगों के लिए शिफ़ा बताता है। श्रीनगर का शहद तो ख़ास

तौर से बहुत आला दर्जे (उच्च श्रेणी) का होता है, क्योंकि वहाँ शहद की मक्खियाँ पहाड़ी इलाक़ों की बड़ी क़ीमती जड़ी-बूटियों का रस भी लाती हैं, जिनमें उनका जौहर भी शामिल हो जाता है। दूसरी जगहों का शहद ऐसा नहीं होता।"

"दादा अब्बू! मैंने कहीं पढ़ा था कि हमारे प्यारे नबी (सल्ल॰) को शहद बेहद पसन्द था।" शिफ़ा ने कहा।

"तुमने ठीक पढ़ा है! एक हदीस के मुताबिक़ नबी (सल्ल॰) नहार मुँह पानी में शहद घोलकर उसका एक प्याला पीया करते थे।[1] एक रिवायत यह भी है कि आप (सल्ल॰) ने एक मरीज़ को जिसे दस्त आ रहा था, शहद पीने की सलाह दी थी जिससे वह ठीक हो गया।[2] शहद की मक्खी के डंक से जो ज़हर निकलता है उससे गठिया और जोड़ों के दर्द की दवा तैयार की जाती है। हकीम लोग तो अपनी ज़्यादातर दवाओं के लिए शहद का इस्तेमाल ज़रूरी समझते हैं। शहद के अलावा शहद की मक्खी के छत्तों से निकलनेवाला मोम भी बहुत काम की चीज़ है।" दादा अब्बू ने बताया।

"इस मोम का भला क्या होता होगा?" ऐमन ने पूछा।

"छत्तों से हासिल किए गए मोम से कई तरह के लोशन और मरहम तैयार होते हैं। इसके अलावा क्रीम, पॉलिश और मोमबत्तियाँ बनाने में भी इसका इस्तेमाल किया जाता है।"

---

1. देखें : ज़हबी इब्ने-क़य्यिम
2. अबू-सईद ख़ुदरी (रज़ि॰) बयान करते हैं कि, एक आदमी नबी (सल्ल॰) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और बयान किया कि उसके भाई को इसहाल हो रहे हैं! अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, इसे शहद पिलाओ। वह फिर आकर कहने लगा कि शहद पीने से इसहाल में इज़ाफ़ा हुआ। आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि शहद पिलाओ। इसी तरह वह हाल बयान करता, तीन मरतबा आ चुका तो चौथी मरतबा इरशाद हुआ कि इसे शहद पिलाओ, क्योंकि अल्लाह तआला ने सच कहा है और तुम्हारे भाई का पेट झूठ कहता है। इसने शहद पिलाया तो मरीज़ तनदुरुस्त हो गया।

(हदीस : बुख़ारी, मुस्लिम)

शहद की मक्खी की बातें इतनी दिलचस्प और कारनामे इतने हैरतअंगेज़ थे कि वक़्त का अन्दाज़ा ही नहीं हो सका। दादा अब्बू ने घड़ी पर नज़र डाली और बोले—

"भई! शहद की मक्खी की बातों में तो बहुत देर हो गई, मगर मुझे पूरी उम्मीद है कि इन्हें सुनने के बाद न सिर्फ़ क़ुरआन की आयतें अच्छी तरह तुम्हारी समझ में आ गई होंगी, बल्कि सुबह बोटैनिकल गार्डेन में तुमने जो कुछ देखा था वह भी पूरी तरह तुम्हारी समझ में आ गया होगा। इसके बाद दादा अब्बू और बच्चे अपने-अपने कमरों में सोने चले गए। मगर बच्चे शहद की मक्खी की ज़िन्दगी और उसके कारनामों के बारे में सोच रहे थे। छोटी-सी शहद की मक्खी उनकी नज़र में थी जिसे ख़ुदा ने हैरान करनेवाली सलाहियतों से नवाज़ा है और जो अल्लाह की मुक़र्रर की हुई राहों पर चलकर न सिर्फ़ ख़ुद एक मुनज़्ज़म और ज़ाबिते के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारती है, बल्कि इनसानों के फ़ायदे के लिए भी काम करती है।"

इसी तरह अल्लाह की बताई हुई राह पर चलकर इनसान भी अपने लिए और सारी दुनिया के लिए फ़ायदेमन्द बन सकता है। इसी राह में ज़िन्दगी की कामयाबी है।

●●

बाल-कहानी

जन्नती बच्चा

माइल ख़ैराबादी

जन्नती बच्चा

नन्हे मियाँ की समझ में यह बात तो अच्छी तरह आ गई कि जन्नत में आम होंगे, अमरूद होंगे, सेब होंगे, अँगूर होंगे और बहुत से फल होंगे, सारे फल मीठे होंगे। जन्नती ख़ूब मज़े से खाएँगे।

नन्हे मियाँ की समझ में यह बात भी अच्छी तरह आ गई कि जन्नत में नहरें बहती होंगी। नहरों का पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद, शहद से ज़्यादा मीठा और बर्फ़ से ज़्यादा ठण्डा होगा, जन्नती मज़े ले-लेकर पिएँगे।

और, नन्हे मियाँ की समझ में यह बात भी अच्छी तरह आ गई कि जन्नत में हर रंग के फूल और हर तरह के पौधे होंगे। सारे-के-सारे फूल ख़ुशबूदार होंगे और पौधों पर रंग-बिरंगी चिड़ियाँ चहचहाती होंगी। जन्नती जो फूल चाहेंगे सूँघेंगे, हार बनाकर पहनेंगे और चिड़ियों की रागनियाँ सुनेंगे। और यह भी कि जन्नत में बड़े ठाठ से रहेंगे।

लेकिन, जब अम्मीजान ने यह बताया कि जन्नत में हूरें होंगी, ग़िलमान होंगे तो यह बात नन्हे मियाँ की समझ में न आई। उन्होंने अम्मीजान से पूछा, "ये हूरें और ग़िलमान क्या है?" अम्मीजान ने बताया कि—"ग़िलमान वहाँ के बच्चे होंगे और हूरें औरतों की तरह अच्छी होंगी, बहुत अच्छी, बहुत-ही अच्छी।"



"अच्छी, बहुत अच्छी, बहुत ही अच्छी"—नन्हे मियाँ ने यह बात दोहराई, उसके बाद अम्मीजान से पूछने लगे कि, "अम्मीजान! हूरें क्या आप से भी अच्छी होंगी?"

"हाँ बेटे! हूरें मुझसे भी अच्छी होंगी।" अम्मीजान के इस जवाब से नन्हे मियाँ सोच में पड़ गए। फिर अपने-आपसे बोले—"अम्मी-जान से अच्छी हूरें कैसे हो सकती हैं?"

अम्मीजान ने बड़ी कोशिश की कि नन्हे मियाँ की समझ में यह बात भी आ जाए, लेकिन उनकी समझ में किसी तरह न आया, उनकी ज़बान से हर बार यही निकलता रहा, "क्या अम्मीजान से भी कोई अच्छा हो सकता है?"

"बेटे! सच मानो, हूरें ऐसी ही अच्छी होंगी।"

"क्या आपने हूरों को देखा है?" नन्हे मियाँ ने सवाल किया।

"नहीं, मैंने देखा तो नहीं...।"

"फिर आपको कैसे मालूम हुआ?"

"अल्लाह पाक ने अपनी किताब 'क़ुरआन मजीद में हूरों की तारीफ़ की है और प्यारे नबी (सल्ल॰) जब मैराज में गए थे तो उन्होंने हूरों को देखा था। प्यारे नबी (सल्ल॰) ने अपने प्यारे साथियों (सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम) को बताया। सहाबा (रज़ि॰) ने दूसरे लोगों को बताया। इसी तरह लोगों ने जाना।"

"तो फिर ठीक है।" नन्हे मियाँ ने अम्मी की बात मान ली, लेकिन वे सोचते रहे और बार-बार कहते रहे—"न जाने हूरें कैसी होंगी?"

नन्हे मियाँ इसी सोच में रहे, दिन भर रहे। रात आई, अपनी चारपाई पर लेटे तो यही सोचते रहे। देर तक सोचते रहे। यही सोचते-सोचते सो गए। कुछ देर के बाद अचानक चौंक पड़े। आँखें फाड़-फाड़कर इधर-उधर देखने लगे।

"ऐं! यह बाग़ कैसा?" नन्हे मियाँ की ज़बान से निकला और वह हक्का-बक्का होकर रह गए।

"या अल्लाह! यह कौन-सी जगह है? मैं कहाँ हूँ? यह बाग़ कैसा है? किसका है? बहुत ही बड़ा बाग़ है। इसका तो ओर-छोर ही नहीं। और वाह भई वाह! कैसे पेड़-पौधे नज़र आ रहे हैं। पेड़-पौधे सब फलों और फूलों से



लदे हैं। अरे वाह! आम भी हैं, अमरूद भी हैं, सेब भी हैं, अँगूर भी हैं और तरह-तरह के फ़ल हैं। ओहो! फूल भी तो रंग-बिरंगे खिले हैं।"

नन्हे मियाँ को बड़ा ताज्जुब यह था कि हर मौसम के फल और फूल खिले हुए थे। उन्होंने सोचा, "यह तो अनोखी बात है। ऐसा बाग़ न कभी देखा, न सुना। हर मौसम के फल-फूल एक साथ। आहाहा! यह बाग़ तो सदाबहार है, बाग़ में तरह-तरह की चिड़ियाँ भी तो फुदकती फिर रही हैं। और...और...और मोती की तरह साफ़ पानी की नहरें भी बह रही हैं...।"

नन्हे मियाँ आँखें फाड़े यह सब देखते रहे। देखते रहे और ताज्जुब करते रहे। ताज्जुब करते रहे और सोचते रहे। फिर अचानक बोले, "ओहो! अब

मैं समझा। हो-न-हो यह अल्लाह मियाँ की जन्नत है।"

अल्लाह मियाँ की जन्नत का ख़याल आया तो नन्हे मियाँ के दिल ने कहा, "तो फिर यहाँ हूरें भी होंगी। ग़िलमान भी होंगे।"

नन्हे मियाँ बड़े ध्यान से जन्नत की तरफ़ देखने लगे। अब जो उन्होंने देखा तो जन्नत के आसपास चारदीवारी नज़र आई। एक तरफ़ बड़ा-सा फाटक दिखाई दिया। नन्हे मियाँ फाटक की तरफ़ चले। बड़ा शानदार फाटक था। हीरे-जवाहरात से सजा हुआ था। नन्हे मियाँ क़रीब पहुँचे, चाहा कि अन्दर जाएँ। अचानक आवाज़ आई, "ठहरो! कहाँ जाते हो?" नन्हे मियाँ रुक गए। जिधर से आवाज़ आई थी, उधर देखने लगे। उधर कुछ लोग बैठे थे, सबके सब बड़े ख़ूबसूरत, बड़े गोरे-चिट्टे थे। सब-के-सब नूरानी चेहरे वाले थे और बड़े बुज़ुर्ग मालूम हो रहे थे। वे नन्हे मियाँ को बहुत अच्छे लगे। सोचा, "ये आदमी तो है नहीं।" फिर अपने-आप दिल में सवाल किया, "तो फिर कौन लोग हैं?" और फिर ख़ुद कहने लगे, "ओहो! हो न हो ये सब जन्नत की देखभाल करनेवाले फ़रिश्ते हैं।" फ़रिश्तों का ख़याल आया तो नन्हे मियाँ को अपनी किताब 'दीनयात' याद आई। उनको याद आया कि 'दीनयात' में लिखा है—'जन्नत के दारोग़ा का नाम "रिज़वान" है।'

यह याद आया तो नन्हे मियाँ ग़ौर से देखने लगे कि उन फ़रिश्तों में "रिज़वान साहब" कौन बुज़ुर्ग हैं? वे उधर चले। सोचा, पास जाकर मालूम ही हो जाएगा। वे उन फ़रिश्तों के पास पहुँचे और पुकारा—"अस्सलामु अलैकुम।"

"व अलैकुम अस्सलाम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।"

फ़रिश्तों ने जवाब दिया और नन्हे मियाँ पर ऊपर से, दाएँ से, बाएँ से फूलों और मोतियों की बारिश होने लगी। नन्हे मियाँ फूल की तरह खिल उठे। उस वक़्त न उन्हें किसी तरह का डर था और न खटका। उनका दिल बाग़-बाग़ हो रहा था।

उन्होंने पूछा, "आप साहबान में 'रिज़वान' साहब कौन बुज़ुर्ग हैं?" फ़रिश्ते यह सुनकर मुस्कुरा दिए। रिज़वान साहब से मिलाया। रिज़वान ने एक फ़रिश्ते को कुछ इशारा किया। इशारे के साथ ही नन्हे मियाँ को दूध से ज़्यादा सफ़ेद, शहद से ज़्यादा मीठा और बर्फ़ से ज़्यादा ठण्डा शरबत पिलाया गया। नन्हे मियाँ ने पिया तो ख़ुश होकर बोले, "अरे वाह! ठण्डा तो इतना, लेकिन बर्फ़ की तरह दाँतों में नहीं लगता।" नन्हे मियाँ ने शरबत पीकर अल्लाह का शुक्र अदा किया।

रिज़वान ने पूछा, "नन्हे मियाँ। आप यहाँ कैसे आ गए?"

"रिज़वान साहब! यह तो मुझे मालूम नहीं कि मैं यहाँ कैसे आ गया।" यह कहकर नन्हे मियाँ हँसने लगे। फ़रिश्ते भी मुस्कुरा दिए।

"अच्छा यह बताइए कि आप इधर क्यों आए?"

"रिज़वान साहब! मैंने बताया कि, मैं बस इधर आ निकला। मगर जब आया और देखा कि सामने जन्नत है, तो सोचा लाओ दो-घड़ी इसकी सैर कर लूँ। तो मैं यही चाहता हूँ कि आप मुझे ज़रा जन्नत की सैर करा दें।"

"हमें अफ़सोस है नन्हे मियाँ! आप अभी जन्नत में नहीं जा सकते।" रिज़वान ने नन्हे मियाँ को जवाब दिया। नन्हे मियाँ ने कहा, "अच्छी बात है। अभी नहीं थोड़ी देर बाद सही।"

"नहीं, नहीं..." रिज़वान ने समझाया—"नन्हे मियाँ! 'अभी' का मतलब यह है कि जब तक 'क़ियामत' न हो जाए, हश्र के मैदान में अल्लाह पाक एक-एक से उसके कामों की जाँच-पड़ताल न कर लें, उस वक़्त तक कोई जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता। क़ियामत से पहले अल्लाह ने अपने कुछ रसूलों को तो जन्नत की सैर करा दी रसूलों के सिवा कोई जन्नत की हवा तक नहीं पा सकता।"

"ओहो! मुझे याद आया, रिज़वान साहब! आपने ठीक कहा। हमारी किताब 'दीनयात' में भी यही लिखा है। मगर भाई, इस वक़्त हमारे आने पर ध्यान दीजिए, हमें अपना मेहमान समझकर बस ज़रा-की-ज़रा...।"

"न न!" नन्हे मियाँ पूरी बात न कह सके थे कि रिज़वान ने इनकार कर दिया। बताया कि, "जन्नत में अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई नहीं जा सकता।"

"तो फिर अल्लाह पाक से हुक्म ले लीजिए। आप लोग पहुँचे हुए होते हैं।"

"वाह मियाँ नन्हे! जान-बूझकर अनजान बनते हो। तुमने 'दीनयात' में यह भी पढ़ा होगा कि अल्लाह तआला हश्र के मैदान में हिसाब-किताब करके जन्नत में जाने का हुक्म देंगे। उस दिन जिससे वह खुश होगा वही जन्नत में जा सकेगा।"

"हाँ, साहब! ठीक कहते हैं आप, 'दीनयात में यह सब लिखा है।" नन्हे मियाँ उदास हो गए। उन्हें यह अफ़सोस हो रहा था कि जन्नत के दरवाज़े पर आकर उसकी सैर न कर सके। रिज़वान समझ गए कि नन्हे मियाँ क्यों

उदास हो गए। समझाया—"नन्हे मियाँ! उदास न हो अल्लाह ने चाहा तो तुम जन्नत के मज़े लूटोगे। बस अल्लाह को राज़ी कर लो। तुम अच्छे बच्चे तो हो ही, बस सारी ज़िन्दगी अच्छे ही बने रहो। तुमको तो मालूम होगा कि अच्छा किस तरह बनते हैं?"

"जी हाँ! मुझे मालूम है। बस आदमी अच्छे काम करे। मैं आपकी दुआ से अच्छे काम करता हूँ। मैं अपनी अम्मी का कहना मानता हूँ। अब्बा जान का अदब करता हूँ। जो कुछ वे कहते हैं, वह करता हूँ। शौक़ से पढ़ता हूँ। किसी से लड़ता नहीं। सच बोलता हूँ। नानी अम्मा की ऐनक खो जाती है तो ढूँढ़कर दे देता हूँ। दादा जान के पास बैठकर उनका दिल बहलाता हूँ। तो हुआ न मैं अच्छा बच्चा?"

"बेशक, ये सब अच्छे काम हैं, मगर इतना ही नहीं...।"

"अच्छा तो और सुनिए! वो जो हमारे घर के सामने बूढ़ी- माँ रहती हैं, वे अंधी हैं न! तो मैं रोज़ उनको खाना देने जाता हूँ। मेरी अम्मी कहती हैं कि ग़रीबों को खाना खिलाने से अल्लाह ख़ुश होता है। देखिए रिज़वान साहब! हमारी अम्मीजान बड़ी सच्ची हैं, झूठ बात नहीं कहतीं। झूठ बोलनेवाले से तो अल्लाह पाक नाराज़ हो जाते हैं। ठीक है न रिज़वान साहब?"

"हाँ ठीक है, नन्हे मियाँ! मगर अल्लाह को ख़ुश करने की ख़ास-ख़ास बातें तुमने नहीं बताईं।"

"ख़ास-ख़ास बातें?" नन्हे मियाँ सोचने लगे। "भई ख़ास-ख़ास बातें क्या?" फिर कुछ सोचकर फड़क उठे—"रिज़वान साहब! सुनिए, ख़ास

बात, मुझे याद आ गई।'' 'दीनयात' वाली बात। देखिए, मैं अल्लाह का दीन फैलाता हूँ। अपने दोस्तों को इकट्ठा करता हूँ, उनसे कहता हूँ, अच्छे काम करो। बुरे काम छोड़ दो। अपनी अम्मी का कहना मानो। बाप का अदब करो ग़रीबों की मदद करो...।''

''अरे भई, नन्हे मियाँ! ये अच्छे काम तो तुम बता चुके। हाँ, तुमने दीन फैलाने की बात बताई। यह ख़ास बातों में से एक बात है। और ख़ास-ख़ास बातें बताओ।''

''और ख़ास-ख़ास बातें!'' नन्हे मियाँ सोचने लगे। कुछ याद न आया तो पूछ बैठे, ''अच्छा तो, आप ही बता दीजिए।''

''सुनिए नन्हे मियाँ! सबसे पहली बात यह है कि पहले आदमी मुसलमान तो हो।''

''अरे वाह! आपने भी क्या बात कही। वह तो मैं जानता ही हूँ। अल्लाह के फ़ज़्ल से मैं मुसलमान हूँ। यह भी कोई बताने की बात है।''

''अच्छा तो बताइए, मुसलमान किसे कहते हैं?''

''रिज़वान साहब! इसका तो मुझसे एक-एक शब्द सुन लीजिए। इसका जवाब तो मुझे ख़ूब याद है। देखिए, मुसलमान वह है जो अल्लाह पर ईमान लाए। अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान लाए और अल्लाह की किताबों पर ईमान लाए और अल्लाह के रसूलों पर ईमान लाए। और देखिए सबसे बड़ी बात यह कि अल्लाह की आख़िरी किताब क़ुरआन पाक में जिन-जिन बातों पर ईमान लाने के लिए लिखा है, उन सब बातों पर ईमान लाए।''

''शाबाश! नन्हे मियाँ! शाबाश! तुम बड़े अच्छे बच्चे हो। मगर यह

बताओ कि बस ईमान लाना ही काफ़ी है?"

"अच्छा, आपने यह वह बात पूछी, जो हमारे मौलाना साहब ने एक दिन पूछी थी। हमारे मौलाना साहब ने एक दिन हम से यही सवाल किया, फिर ख़ुद ही कहने लगे कि बस ईमान लाना ही काफ़ी नहीं है। बल्कि ईमान लाने के बाद ज़रूरी है कि अल्लाह ने जिन बातों के करने का हुक्म दिया है, इनसान उनको करे और उस तरह करे, जिस तरह प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने बताया, समझाया और करके दिखा दिया। और अल्लाह ने जिन बातों के करने से रोका है, उनसे रुक जाए। यानी उन बुरे कामों को न करे। रिज़वान साहब! हमारे मौलाना साहब बहुत क़ाबिल आदमी हैं, वे कभी ग़लत बात नहीं बताते।"

"बिलकुल ठीक बताया मौलाना साहब ने। अच्छा अब यह बताओ कि अल्लाह ने किन बातों के करने का हुक्म दिया है?"

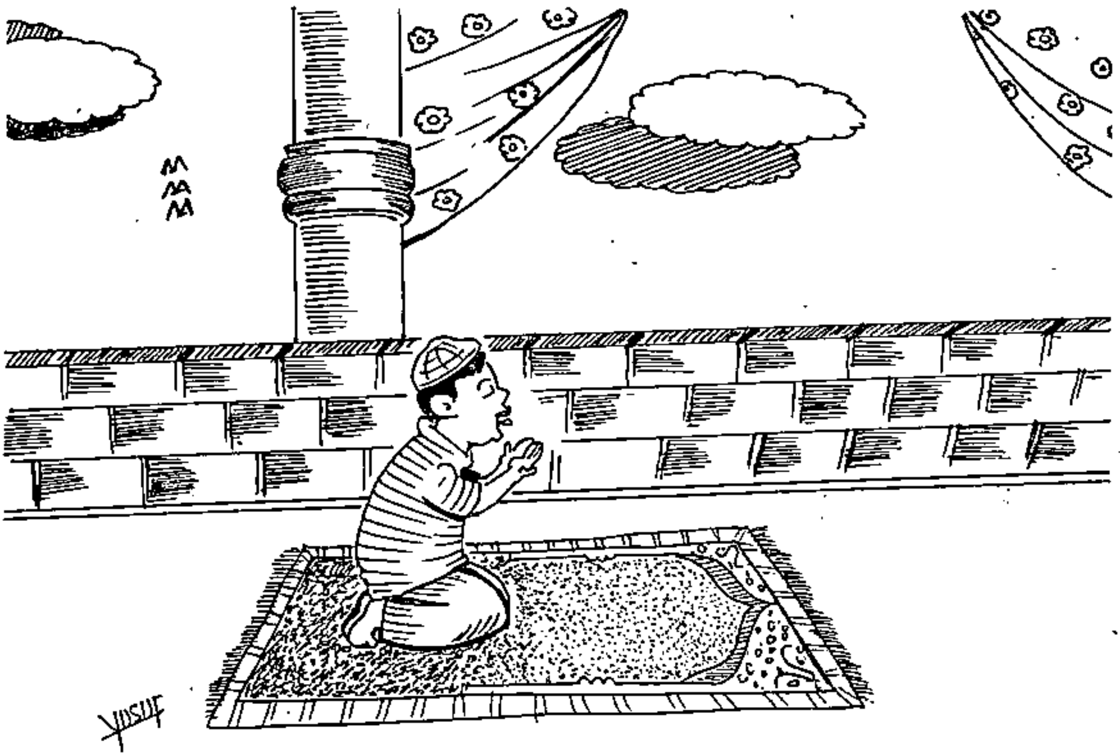
"लीजिए, यह भी सुनिए...! अम्मीजान का कहना मानो। बाप का अदब करो। ग़रीबों की मदद करो...।"

"ओह! नन्हे मियाँ! आपने फिर वही रटा हुआ सबक़ सुनाना शुरू कर दिया। तरतीब से बताओ?"

"तरतीब से! तरतीब के मानी क्या हैं?"

"तरतीब के मानी ये हैं कि पहले यह बात, उसके बाद यह बात, उसके बाद यह और यह वग़ैरा।"

अब तो नन्हे मियाँ रिज़वान साहब का मुँह तकने लगे। रिज़वान साहब ने बताया, "देखिए नन्हे मियाँ! मुसलमान होने के साथ ही सबसे ज़्यादा,



निहायत ज़रूरी यानी सबसे पहले करने की बात यह है कि मुसलमान नमाज़ का पाबन्द हो जाए।"

"अरे! यह तो मैं जानता हूँ। मैं 'पाबन्द' के मानी जानता हूँ। पाबन्द के मानी हैं पाँचों वक़्त की नमाज़ें ठीक वक़्त से और जमाअत के साथ पढ़नेवाला।"

"अरे भई, जानते थे तो बताते। अच्छा, अब बताओ उसके बाद क्या करे?"

"हमारे मौलाना साहब ने बताया था कि नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिए कि फिर कोई बुरी बात न करे। झूठ न बोले, चोरी न करे, किसी का मुँह न चिढ़ाए, किसी को लँगड़ी न लगाएँ, बे पूछे किसी की चीज़ न ले ले,

किसी को चोंच न दिखाए। ये सब बुरे काम हैं। हैं न! हमारे मौलाना साहब ने कहा था कि 'नमाज़ तमाम बुराइयों से रोक देती है।' उन्होंने यह भी बताया कि यह बात क़ुरआन में लिखी है। और क़ुरआन की कोई बात ग़लत नहीं।''

यह जवाब सुनकर रिज़वान साहब और दूसरे फ़रिश्ते मुस्कुराए। नन्हे मियाँ से बहुत ख़ुश हुए, फिर कहने लगे कि, ''नन्हे मियाँ! अभी तुम बच्चे हो। बच्चों की तरह ही बातें करते हो। देखो मैं तुमको बताता हूँ कि तुम्हारा काम यह है कि सबसे पहले क़ुरआन और प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की प्यारी बातें यानी हदीस का इल्म ख़ूब जी-लगाकर सीखो। यह इल्म हासिल किए बग़ैर सारी बातें जान लेना बहुत मुश्किल है। जो बात जानते जाओ उस पर अमल करते जाओ। अमल करने के साथ-साथ दूसरों को भी बताते जाओ और...।''

''रिज़वान साहब! वह तो मैं करता हूँ। इसी को तो दीन फैलाना कहते हैं।''

''ठीक है। एक बात और सुन लो। दीन फैलाने में बड़ी मशक़्क़त झेलनी पड़ेगी, तो देखो, सब्र से काम लेना।''

''बिलकुल ठीक है रिज़वान साहब! एक बार मैंने जलाल से कहा कि भाई! नमाज़ पढ़ा करो। रोज़े रखा करो। तो वह बिगड़ गया। तौबा-तौबा! कहने लगा कि क्या मेरे घर में खाना नहीं जो भूखा मरूँ। रिज़वान साहब! मुझे उस वक़्त गुस्सा ही आ गया था, मगर मैं गुस्सा पी गया। इसी को तो कहते हैं—सब्र!''

''अच्छा किया तुमने। एक बात और याद रखना। जब कोई काम करना

तो यह याद रखना कि अल्लाह तुमको देख रहा है।"

"रिज़वान साहब! यह बात तो मुझे मालूम है। मैं आपको बड़ा मज़ेदार क़िस्सा सुनाता हूँ—एक दिन मौलाना साहब ने पाँच सवाल लिखाए हम सबको अलग-अलग बैठा दिया। और यह कहकर कमरे के बाहर चले गए कि 'नक़ल न करना और न आपस में पूछना।' उनके जाने के बाद मैं तो चुपचाप सवाल हल करता रहा, मगर दुलारे लिखने-पढ़ने में बड़ा कमज़ोर है। उसका जी ही नहीं लगता पढ़ने में, तो आएगा क्या? ख़ाक! अच्छा तो दुलारे ने इधर-उधर नक़ल करने की कोशिश की। हमारे मौलाना साहब चले तो गए कमरे के बाहर, लेकिन वे छुपकर देखते रहे कि कौन लड़का नक़ल कर रहा है। फिर मैं क्या बताऊँ आपको, दुलारे की वह पिटाई हुई कि बस तौबा ही भली। आपने बिलकुल ठीक कहा है कि अल्लाह सब कुछ देखता रहता है। उससे तो कुछ भी नहीं छुप सकता। हमारे मौलाना साहब से तो छुप सकता है लेकिन अल्लाह को तो ढका-छुपा सब मालूम है। जो उसको हाज़िर और नाज़िर यानी देखनेवाला न समझेगा, सच्ची बात है कि वही बुरे काम करेगा, दुलारे की तरह। और फिर जिस तरह दुलारे की पिटाई हुई, उसी तरह अल्लाह मियाँ क़ियामत के दिन ऐसे आदमी से नाराज़ होंगे। तो भला जिससे अल्लाह मियाँ नाराज़ होंगे उसे जन्नत किस तरह मिल सकती है?"

"बिलकुल ठीक है नन्हे मियाँ! तुम बड़े समझदार लड़के हो। अच्छा, अब जाओ अपने घर। अल्लाह के हुक्मों को जानते रहना, और उनपर चलते रहना। उसके बाद अल्लाह ने चाहा तो जन्नत तुम्हारी है। अच्छा, खुदा हाफ़िज़, अस्सलामु अलैकुम!"

सलाम करके रिज़्वान ने नन्हे मियाँ को सीने से लगा लिया। रिज़्वान ने सीने से लगाया तो नन्हे मियाँ को बड़ा अच्छा लगा। ऐसा अच्छा लगा जैसे उन्हें जन्नत मिल गई। उन्हें नींद-सी आने लगी और वे सो गए।

जागे तो इधर-उधर आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। न अब रिज़्वान साहब, न फ़रिश्ते और न जन्नत सामने, न जन्नत का दरवाज़ा। बस अपनी चारपाई पर लेटे थे। वे उठकर बैठ गए। उनकी ज़बान से निकला, "अरे वाह! मैं तो अपने घर में हूँ।"

उनकी यह बात अम्मी ने सुनी तो पूछा, "क्या बात है?" नन्हें मियाँ ने अपना पूरा ख़्वाब कह सुनाया। अम्मीजान ख़्वाब सुनकर बहुत ख़ुश हुईं। दुआ दी कि "अल्लाह तआला नन्हे मियाँ को अपना फ़रमाँबरदार बन्दा बनाए और उनसे अपनी मरज़ी के काम ले और आख़िरत में जन्नत अता फ़रमाए।"